Dr. Priti Ranjan
H. D. Jain College
Deptt of history
MA - II
paper - 5

Topic — [illegible] Sir Jadunath sarkar

सर यदुनाथ सरकार

सर यदुनाथ सरकार का जीवन इतिहास अध्ययन के लिए समर्पित रहा। उन्होंने औरंगजेब शिवाजी मुगल साम्राज्य के पतन पर न कुछ पुस्तकों की रचना की बल्कि अधिक से अधिक मूल एवं अभिलेखीय सामग्रियों को ढूंढने के लिए अथक परिश्रम किया। भारतीय इतिहास लेखन के क्षेत्र में यदुनाथ जी ने 1891 में सुहृद में अपना एक निबंध 'टीपू सुल्तान का पतन' प्रकाशित कर प्रवेश किया।

सामान्य तौर पर यदुनाथ सरकार का मुख्य विषय मुगलकालीन इतिहास था। इंडिया ऑफ औरंगजेब, टोपोग्राफी, स्टैटिस्टिक्स एण्ड रोड्स उनके प्रेमचन्द्र रायचन्द्र छात्रवृत्ति का विषय था जो 1901 में प्रकाशित हुआ और एकाएक वे स्थापित इतिहासकार के रूप में स्थापित हो गये। उन्होंने अपने अध्ययन का विषय औरंगजेब चुना था। इसी क्रम में उन्होंने औरंगजेब का इतिहास पांच भागों में लिखा। जिसे पूरा करने में 12 वर्ष (1912-24) लग गये। इसमें औरंगजेब के बारे में आरंभ से लेकर पतन तक का विवरण है। इस पुस्तक का तीसरा खंड बहुत ही विवादास्पद थी। इसमें उन्होंने औरंगजेब की धार्मिक नीति की आलोचनात्मक ~~व्याख~~ व्याख्या की है और इसे मुगल काल के पतन के लिए जिम्मेदार ठहराया।

1922 में उन्होंने लैटर मुगल्स नामक पुस्तक 2 जिल्दों में प्रकाशित करवाया जो कि उस काल के प्रसिद्ध विद्वान इर्विन के असामयिक मृत्यु हो जाने के कारण पूरा न हो सका था। जिसे यदुनाथ सरकार ने पूरा किया। 1920-24 के बीच उन्होंने मुगल प्रशासन पर पुस्तक लिखी जो कि मुस्लिम प्रशासन पर इनकी दखल दिखलाती है।

उनकी पुस्तक फॉल ऑफ मुगल इम्पायर इर्विन के अधूरे कार्य को पूरा करने की इच्छा से लिखी गयी। यह तक चार जिल्दों में प्रकाशित हुई।

मुगल अध्ययन के फलस्वरूप दो और प्रमुख कृतियाँ Shivaji and His Time (1914) और Mugal Administration (1920) में प्रकाशित हुई। यह मराठा इतिहासकारों में काफी आलोचना की शिकार हुई।

आलोचना के बाद तथ्यों के आधार पर इन्होंने दूसरी पुस्तक House of Shivangi 1933-34 में प्रकाशित करायी। वो भी ऐतिहासिक निबंधों और अभिलेखों का संग्रह है।

उन्होंने 1909 Economics History of British लिखी। इसमें उपनिवेशिक भारत के आर्थिक नीति की आलोचनात्मक धारणा थी। यह पुस्तक इतनी प्रसिद्ध हुई की इसके चार संस्करण प्रकाशित किए गए।

1913 में उनकी पुस्तक चैतन्य: हिज लाइफ पिलग्रिमेजज एंड टीचिंग्स प्रकाशित हुई। धर्म के इतिहास लेखन के क्षेत्र में उनकी दूसरी कृति History of Dusnami सेक्ट दो जिल्दों में प्रकाशित हुई। इन्होंने भारत की संस्कृति और सम्पूर्ण छवि को सामने लाने के लिए 1926 में India Through the Adges लिखी। इसमें आर्यों से लेकर ब्रिटिश शासन काल तक का भारतीय इतिहास है, इसमें संक्षेप में ही संपूर्णता का आभास मिलता है।

उन्होंने काफी संख्या में मूल फारसी स्त्रोतों का अनुवाद कार्य करके उसे संपादित भी किया। छात्र-जीवन से ही उनकी अभिरुचि युद्धकला के अध्ययन में थी। 1960 में उन्होंने Military History of India प्रकाशित करवायी। उनकी अंतिम कृति A History of Jaipur है।

यदुनाथ सरकार एक मौलिक प्रतिभा के इतिहासकार थे। पाण्डुलिपियों का तुलनात्मक अध्ययन, त्रुटियों को पहचानना और उनमें संशोधन किया। वे प्राथमिक स्त्रोत के उपयोग पर बल देते थे। सभी भाषाओं में उपलब्ध समकालीन मूल स्त्रोत के उपयोग

किये बिना किसी कार्य को पूरा नहीं मानते थे। उनका सिद्धान्त था दस्तावेज नहीं तो इतिहास नहीं। उन्होंने ही सबसे पहले अभिलेखागारों से 'अखबाराते - दरबारे मौला' का उपयोग किया। इतिहास के लिए भूगोल की जानकारी नितान्त जरूरी वे मानते थे और वे अपने अध्ययन से संबंधित स्थानों की यात्राएँ करते थे ताकि घटनाओं को सही समझ तो सकें। वह इतिहास को वृत्तांत से जोड़ते थे। उन्होंने कार्ल - मार्क्स के विचारों से खुद को दूर रखा।

निष्कर्ष

यदुनाथ सरकार की मातृभाषा बंगला थी। इसके अतिरिक्त उन्होंने हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, फारसी, मराठी, राजस्थानी, आसामी, डच, पुर्तगील, फ्रेंच आदि भाषाओं में भी दक्षता हासिल की। अवश्यम्भाविता, प्रकृति का हाथ, व्यक्तिगत कमजोरियाँ, ईश्वर की कृपा को भी चिन्हित करते थे। वास्तव में आधुनिक इतिहासकारों में मध्यकाल पर जितना अच्छा अध्ययन सर यदुनाथ सरकार ने प्रस्तुत किया है वैसा अन्यत्र नहीं मिलता।